आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 13/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

'गिलगडु' उपन्यास: वृद्धजीवन का एक सामाजिक दर्पण

डॉ. सीना कुरियन

सहायक प्राध्यापक

सेंट मैक्लिस्स कॉलेज , चेरत्तला, केरल

seenakurian04@gmail.com,

Mob - 8547637591

डॉ. सीना कुरियन, 'गिलगडु' उपन्यास: वृद्धजीवन का एक सामाजिक दर्पण, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(35 -40)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19496075

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोध सार

चित्रा मुद्गल द्वारा रचित उपन्यास गिलिगडु बुजुर्गों के अकेलेपन, उपेक्षा और सम्मान की आवश्यकता को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है। कथा के मुख्य पात्र जसवंत सिंह, जो एक सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर हैं, पत्नी के निधन के बाद गहरे अकेलेपन में डूब जाते हैं। बेटे के आग्रह पर वे कानपुर छोड़कर दिल्ली आ जाते हैं, जहाँ उन्हें घर में पर्याप्त सम्मान और आत्मीयता नहीं मिलती। उन्हें बालकनी में बने कमरे में रहने को दिया जाता है और परिवार के सदस्य अपने-अपने जीवन में व्यस्त रहते हैं। वे स्वयं को घर में एक अनावश्यक वस्तु की तरह महसूस करने लगते हैं। उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र कर्नल स्वामी है, जो अपने बच्चों के स्वार्थपूर्ण व्यवहार से आहत होकर उनसे अलग रहने का निर्णय लेता है। उसे

सच्चा स्नेह अपने नौकर-नौकरानी और साधारण लोगों से मिलता है। दोनों पात्रों के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि बुजुर्गों को भौतिक सुविधाओं से अधिक प्रेम, सम्मान और अपनत्व की आवश्यकता होती है।

बीजशब्द

वृद्धावस्था,अकेलापन,पारिवारिकउपेक्षा,आत्मसम्मान,मानसम्मान,आर्थिकस्वतंत्रता,आत्मनिर्भरता,पीढ़ी-अंतराल,संवेदनहीनता,पारिवारिकमूल्य,वृद्धाश्रम,संपत्ति-लालसा,मानसिक पीड़ा,बुजुर्गों की अपेक्षाएँ

प्रस्तावना

बुजुर्गों की जरूरतें और अपेक्षाएँ: चित्रा मुद्गल द्वारा रचित उपन्यास गिलिगडु दो वृद्ध व्यक्तियों के जीवन की मार्मिक कहानी प्रस्तुत करता है। इस कथा के मुख्य पात्र रिटायर्ड सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह हैं, जो अपनी पत्नी के साथ कानपुर के जवाहर नगर स्थित अपने घर में सुख-सुविधाओं के साथ शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके घर के पीछे बने गैराज में उनके नौकर राम आसरे पासी और उसका परिवार रहता था। राम आसरे की पत्नी सुनगुनिया घर के कामकाज में सहायता करती थी।

जसवंत सिंह के दो बच्चे थे — नरेन्द्र और शालिनी। नरेन्द्र सिंह कुशवाहा एन.पी.टी.सी. में चीफ इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे और अपने परिवार के साथ दिल्ली में रहते थे। शालिनी अपने पति और बच्चों के साथ त्रिवेन्द्रम में रहती थी।अचानक जसवंत सिंह की पत्नी का निधन हो गया, जिससे वे गहरे अकेलेपन में डूब गए। इसी बीच उनके बचपन के मित्र हरिहर दुबे का भी देहांत हो गया, जो घर में अकेले रहते थे। उनकी मृत्यु का पता तब चला जब तीन-चार दिन बाद घर से दुर्गंध आने लगी और दरवाजा तोड़कर देखने पर उनका शव मिला। इस घटना ने जसवंत सिंह को भीतर तक झकझोर दिया और उनका अकेलापन और बढ़ गया। स्थिति ऐसी हो गई कि उन्होंने कानपुर वाले घर की देखभाल सुनगुनिया को सौंप दी और बेटे नरेन्द्र के साथ दिल्ली जाने का निर्णय लिया। दिल्ली में नरेन्द्र का फ्लैट दो बेडरूम का था। वहाँ बालकनी को स्लाइडिंग ग्लास लगाकर एक कमरा बना दिया गया था, और वही कमरा जसवंत सिंह को दिया गया। यह व्यवस्था उन्हें मन से स्वीकार नहीं हुई और वे भीतर ही भीतर असंतोष और उपेक्षा का अनुभव करने लगे।

वृद्धावस्था में अक्सर बुजुर्गों को अपने ही परिवार से अनदेखी और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका मन आहत होता है और जीवन का संतुलन बिगड़ जाता है। पत्नी के निधन के बाद, बच्चों के साथ रहते हुए भी वे स्वयं को अकेला और असहाय महसूस करते हैं। बुजुर्गों को अपने बच्चों से सिर्फ अपनापन, प्यार और आत्मीयता चाहिए। लेकिन आधुनिक पीढ़ी का व्यवहार अक्सर स्वार्थ और भौतिक संपत्ति तक सीमित रहता है, जो बुजुर्गों के लिए पीड़ादायक होता है।“नहीं चाहते कि बुढ़ापे में हाथ पैर तुड़वाकर वे औरों की दयादृष्टि के मोहताज हो जाएं”1 बूढ़े लोग अपनी ज़िंदगी ऐसे जीना चाहते है कि बुढ़ापे में उन्हें किसी और पर आश्रित न होना पड़े और वे खुद अपने काम करने में सक्षम रहें।

जसवंत सिंह अपनी पत्नी की अचानक मृत्यु के बाद बिल्कुल अकेले पड़ गए। एक मित्र के निधन का समाचार सुनकर वे और अधिक व्यथित हो उठे। बेटे के आग्रह पर उन्हें कानपुर छोड़कर उसके साथ दिल्ली आना पड़ा। वहाँ घर में स्लाइडिंग ग्लास लगाकर बनाई गई बालकनी को ही उनके रहने का स्थान बना दिया गया। जब उन्होंने अपनी असुविधा व्यक्त की तो बेटे ने इसे महत्व नहीं दिया। रात में कई बार शौच के लिए उठने पर उन्हें परेशानी होती थी, और बालकनी में रहना उनके लिए कष्टदायक था। बेटे का कहना था कि इतनी रात में बार-बार उठना ठीक नहीं है और सफाई करना भी कठिन है।

घर में बच्चों के कमरों में कंप्यूटर और अन्य कीमती वस्तुएँ रखी थीं, इसलिए वहाँ उन्हें स्थान नहीं दिया जा सकता था। बच्चों की पढ़ाई की मेजें, पुस्तकें और अलमारियाँ भी वहीं थीं। बेटा, बहू और पोता अपने-अपने कामों में व्यस्त रहते थे। किसी के पास उनके साथ बैठकर बात करने या समय बिताने का अवकाश नहीं था। धीरे-धीरे वे घर में एक अनावश्यक वस्तु की तरह महसूस करने लगे। यहाँ तक कि घर के कुत्ते टॉमी को भी उनसे अधिक महत्व दिया जाता था। "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं एक टॉमी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह! टॉमी की स्थिति निसंदेह उनकी बनिसबत मजबूत है।"2 स्पष्ट है कि टॉमी की स्थिति उनसे अधिक मजबूत थी।

घर में सभी लोग अपनी-अपनी इच्छाओं में व्यस्त रहते हैं। किसी को भी यह चिंता नहीं कि किसे किसकी आवश्यकता है। टॉमी नाम का कुत्ता घर की प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है, लेकिन बच्चों के व्यवहार से परिवार की छवि धूमिल हो रही है। घर के बच्चे अपने दादाजी के पास बैठना या उनसे बातें करना पसंद नहीं करते। माता-पिता ने भी उन्हें यही सिखाया है कि वे केवल अपने तक सीमित रहें और किसी पर निर्भर न हों। उन्हें यह समझाया गया है कि जीवन में किसी की जरूरत नहीं होती।

बच्चों को कभी सादे खेल या सामान्य खिलौनों से परिचित नहीं कराया गया। उन्हें हमेशा महंगे और जटिल खिलौने दिए गए, जिससे वे अकेले ही खेलते और दूसरों से दूरी बनाए रखते। गली के बच्चों के साथ खेलने में उनकी रुचि नहीं थी और न ही वे किसी को अपने खेल में शामिल करते थे। इस प्रकार उनके भीतर संवेदनहीनता बढ़ती गई। आधुनिकता और बौद्धिक विकास के नाम पर बच्चों को परिवार और रिश्तों से दूर किया जा रहा था, जिससे वे भविष्य में न तो परिवार से जुड़ पाएं और न ही अपना परिवार बना सकें।जसवंत जी जब बच्चों के साथ मिलकर उनका जन्मदिन मनाना चाहते, तो बच्चे उन्हें अपने कार्यक्रम में शामिल करने के लिए तैयार नहीं होते। वे दोस्तों के साथ बाहर जाकर ही उत्सव मनाना पसंद करते। जसवंत जी की पसंद-नापसंद का भी घर में कोई महत्व नहीं था। उन्हें वही खाना मिलता जो दूसरों को पसंद हो। उनकी पसंद की अनदेखी कर दी जाती। यहाँ तक कि उनका जन्मदिन भी बेटा-बहू भूल गए। उन्हें फोन पर बात करना भी अधिक पसंद नहीं था। इस तरह वे अपने ही घर में अनचाही वस्तु की तरह जीवन जी रहे थे।

जसवंत जी का बेटा पढ़-लिखकर सफल तो बन गया, पर उसमें संवेदनशीलता की कमी थी। माँ के निधन के समय भी वह पिता के साथ ठहरकर उन्हें सहारा देने के बजाय अपने काम में व्यस्त

रहा। उसने माँ के अंतिम संस्कार की परंपराओं को निभाने में भी रुचि नहीं दिखाई। वह आडंबरों में विश्वास नहीं करता था और जल्दी ही दिल्ली लौट जाना चाहता था।एक दिन बेटी ने फोन पर बताया कि माँ के गहने बच्चों को दे दिए जाएँ और उनकी कीमती साड़ियाँ व शॉल भी बाँट दी जाएँ। "लॉकर में अभी है तो बहुत कुछ बाबूजी! अम्मा के अपने कई सेट ,पाच तोले के आजीवाली नाथ, चांदी का ढेरों सामान। अम्मा हमेशा कहती रही- अपनी पचलड़ और कुन्दन का सेट वे अन्वीता को देंगी और विक्रम की बहू के लिए....'।"3 उसने यह भी कहा कि भाई उन्हें किसी अच्छे वृद्धाश्रम में रखने का विचार कर रहा है। ऐसी घटनाओं से जसवंत जी का मन बार-बार आहत होता रहा और अंततः वे बीमार पड़ गए। परिवार होते हुए भी वे स्वयं को अकेला महसूस करते थे। उनके जीवन में यदि कोई सहारा था, तो वह कर्नल स्वामी से मिलना और उनसे बातें करना ही था।

इस उपन्यास का दूसरा बुजुर्ग पात्र है कर्नल स्वामी। सेवानिवृत्त कर्नल विष्णु जैसे पात्रों के माध्यम से बुढ़ापे के अकेलेपन और पारिवारिक रिश्तों की कड़वाहट को दर्शाया गया है। कर्नल स्वामी एक बहुत ही ऊर्जावान और खुशमिजाज व्यक्ति थे। वे हमेशा शारीरिक रूप से सक्रिय रहते थे। हालाँकि, अपनी पत्नी के निधन के बाद वे बिल्कुल अकेले पड़ गए थे। उनके बच्चे नए शहरों में अपनी नौकरियों और भविष्य को बनाने में व्यस्त थे।उनके बच्चे उन्हें झूठे आश्वासन देते थे कि वे जल्द ही उन्हें अपने पास ले जाएंगे, लेकिन असल में उनकी नज़र केवल कर्नल स्वामी की संपत्ति और फ्लैटों पर थी। जब कर्नल स्वामी को अपने बच्चों के स्वार्थी स्वभाव का एहसास हुआ, तो उन्होंने एक बड़ा निर्णय लिया। उन्होंने अपने परिवार को छोड़कर अपनी नौकरानी (रानी) और उसके बच्चों के साथ रहने का फैसला किया। उन्हें लगा कि उन अनपढ़ गाँव वालों का प्रेम उन स्वार्थी पढ़े-लिखे बच्चों से कहीं ज्यादा सच्चा है।

आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व: जसवंत सिंह के निर्णय से यह संदेश मिलता है कि बुजुर्गों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है, ताकि वे अपनी मर्जी से जीवन जी सकें और बच्चों की इच्छाओं पर निर्भर न रहें। उपन्यास के एक अन्य महत्वपूर्ण पात्र रिटायर्ड कर्नल विष्णु हैं। जसवंत जी और कर्नल विष्णु के बीच गहरी दोस्ती हो गई थी। वे अक्सर सुबह की सैर पर साथ जाते थे। जसवंत जी अक्सर अपने घर की समस्याओं और मानसिक परेशानियों को कर्नल विष्णु के साथ साझा करते थे, और कर्नल साहब उन्हें सांत्वना देकर उनका ढांढस बंधाते थे।

जहाँ कर्नल स्वामी के अपने बच्चे केवल धन-संपत्ति के पीछे थे, वहीं गाँव के साधारण लोगों ने उन्हें सच्चा सम्मान और प्यार दिया। यह कहानी दिखाती है कि कैसे उम्र के इस पड़ाव पर इंसान को संपत्ति से ज्यादा अपनों के साथ और मानसिक शांति की जरूरत होती है।

बुजुर्गों की मानसिकता और सम्मान: बुजुर्ग शारीरिक रूप से भले ही कमजोर हो जाएं, लेकिन मानसिक रूप से वे हमेशा अपने सम्मान और आत्मसम्मान के प्रति जागरूक रहते हैं। परिवार में उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता यही होती है।"बिलकुल ठीक यही सीख तुम अपनी बहू को क्यों नहीं देते? उसे नहीं सीखना चाहिए, बुजुर्गों के संग कैसे रहा जाता है? छींक,पाद, डकारें, जवानी और बुढ़ापा देखतीं नरेंद्र!"4 समाज में

अक्सर दूसरों को उपदेश देने की प्रवृत्ति होती है, परंतु अपने घर में वही नियम लागू नहीं किए जाते। बुज़ुर्गों के प्रति सम्मान और सहनशीलता आवश्यक है।हर व्यक्ति को एक दिन बुढ़ापे का सामना करना पड़ता है, इसलिए अहंकार या असम्मान अनुचित है।

जसवंत सिंह एक बार नीम के पेड को देखते है,जिसका तना बुढापे में भी स्थिर है। इससे उन्हें यह एहसास होता है कि अगर उनका शरीर भी उसी स्थिर रहता तो उन्हे भी दिव्य आनंत की अनुभूति होती।वे सोचते है कि शायद यह नीम का वृक्ष उनकी कमज़ोरी का आईना है।"शायद इर्द-गिर्द के सारे बुजुर्ग पेडों के तनों में उन्हीं का वक्षस्थल समाया हुआ हो?"5 जिस प्रकार बुज़ुर्ग अपने अनुभव, स्नेह और संरक्षण से परिवार को थामे रखते हैं, उसी प्रकार पेड़ों के मजबूत तने धरती और वातावरण को संभाले रहते हैं।

बुजुर्गों की सामाजिक स्थिति: बाबू जसवन्त सिंह को लगता है कि उनका सोचना अजीब है और उन पर ध्यान नहीं देंगे। कर्नल स्वामी से मिलने से पहले स्वयं भी हमख्याल नहीं पाते थे और 'सी' बिल्डिंग के मि. भट्ट को छोडकर किसी ओर से बातचीत नहीँ करते।बुजुर्गों की सबसे बड़ी अपेक्षा अपने बच्चों और परिवार से थोड़ा-सा अपनापन और स्नेह है, लेकिन आज की नई पीढ़ी में उनके प्रति न तो आत्मीयता है और न ही सच्चा प्यार। वे अधिकतर उनकी संपत्ति पर अधिकार जमाने की चिंता में रहते हैं। लेखिका ने अपने उपन्यास में इस कटु सच्चाई को समाज के सामने रखकर विचार करने को प्रेरित किया है। जसवंत सिंह का निर्णय यह संदेश देता है कि यदि वृद्ध आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हों, तो उन्हें बच्चों की इच्छाओं के अधीन रहने की आवश्यकता नहीं, बल्कि वे अपनी जीवन-यात्रा स्वयं की इच्छानुसार कर सकते हैं। इस रचना से यह भी स्पष्ट होता है कि बुढ़ापा केवल शरीर को प्रभावित करता है, मन सदैव युवा बना रहता है।

बुजुर्गों के लिए परिवार में सबसे अहम उनका मान और सम्मान है, न कि अन्य भौतिक सुख-सुविधाएँ। आधुनिक युग की व्यस्तता में समाधान यही है कि पुरानी और नई पीढ़ी एक-दूसरे के साथ तालमेल बैठाएँ। बुजुर्गों को अकेला और असहाय छोड़ देना इस समस्या का हल नहीं है। आज वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि युवा अपने माता-पिता की जिम्मेदारी को बोझ मानने लगे हैं। लेखिका चित्रा जी ने इस यथार्थ को अपने उपन्यास में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है और नई पीढ़ी को अपनी वास्तविक जिम्मेदारियों से अवगत कराने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रन्थसूची

1. गिलगडु- चित्रा मुद्गल- पृ. 17
2. गिलगडु- चित्रा मुद्गल- पृ. 14
3. गिलगडु- चित्रा मुद्गल- पृ. 29

4. गिलगडु- चित्रा मुद्गल- पृ. 80

5. गिलगडु- चित्रा मुद्गल- पृ.141

****